RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अलका सरावगी के 'कोई बात नहीं' उपन्यास में चित्रित सामाजिक जीवन

प्रा.सौ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे
हिंदी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

शोधालेख का सारांश

मनुष्य एक समाजप्रिय प्राणी है। समाज की निर्मिती के संदर्भ में कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि वह अनादिकाल से चली आ रही एक लंबी परंपरा है। जिसके मूलगामी स्वरूप के संदर्भ में कुछ कहा जा सकता, लेकिन समाज को एक निश्चित अर्थ तथा निश्चित स्वरूप है। साहित्यकार सामाजिक प्राणी होने के कारण समस्त समाजपरक गतिविधियों से प्रेरित रहता है। उपन्यास इन गतिविधियों की सशक्त परिचायक गद्य विधा है। क्योंकि इसमें अन्य वर्ण्य वस्तुओं के साथ-साथ लोक-जीवन से सम्बन्धित वृत्तात्मकता चित्रित रहती है। इसलिए समाज को उपन्यासों में कथावस्तु का आधार स्वीकार किया गया है। साहित्य समाज की उपज होता है। समाज के विभिन्न तथ्यों कृषि, व्यापार, धर्म, वर्णव्यवस्था एवं संस्कारों को दृष्टि में रखकर ही अनेक प्रकार के उपन्यास लिखे गए। समाज में जातिगत, सामाजिक, धर्मगत, राजनीतिगत सम्बन्धों के अलावा आधुनिक परिवेश और परिस्थितियाँ इसके मूल्य परिवर्तन में सशक्त उपादान बनकर उभरे हैं, जिसकी प्रभावात्मकता हिन्दी उपन्यासों में स्पष्टतः परिलक्षित होती है। अलका सरावगी ने अपने उपन्यास में समाज की अधिकांश समस्याओं को प्रतिबिंबित किया है। *कोई बात नहीं* उपन्यास में अपाहिज की समस्या, उस अपाहिज के कारण निर्माण हुई पारिवारिक समस्या, शिक्षा संबंधी समस्या आदि का चित्रण किया गया है। शशांक को समझाने, जिंदगी जीने की लालसा निर्माण करने तथा जीवनसंबंधी उम्मीद जताने के लिए विभिन्न सामाजिक समस्याओं का जिक्र किया गया है। शोषण की समस्या, पुलिस द्वारा किए जाने वाले अत्याचार की समस्या, महानगरीय समस्या आदि समस्याएँ भी चित्रित हैं। इन समस्याओं द्वारा अलका सरावगी ने सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुति दी है।

प्रस्तावना

मानव एक सामाजिक प्राणी होने की वजह से वह कभी अकेला रह ही नहीं सकता। समाज में रहने से उसके विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है। अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति वह समाज में ही रहकर करता आया है। समाज में घटित होने वाली सारी घटनाओं का असर मनुष्य पर, उसके जीवन पर होता रहता है। मनुष्य और समाज का गहरा संबंध है। कोई लेखक या साहित्यकार अपनी लेखनी से अपने आसपास की परिस्थितियों का, वातावरण का अंकन करता है। समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण वह अपने साहित्य में करता है। इसी वजह से साहित्यकार और समाज के बीच एक अटूट संबंध है। साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से सामाजिक जीवन का अंकन साहित्यकार करते हैं। अलका सरावगी ने 'कोई बात नहीं' उपन्यास के माध्यम से समाज तथा मनुष्य की विभिन्न समस्याओं को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

समाज का अर्थ एवं स्वरूप

जिस प्रक्रिया की वजह से मनुष्य अपने आसपास के वातावरण में घुलमिल जाता है, सभी के साथ सहयोग स्थापित करता है, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है वह है समाज। समाज के संदर्भ विभिन्न प्रकार के मतप्रवाह दृष्टिगोचर होते हैं। समाज शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया जाता है। सामान्य अर्थ की दृष्टि से समाज शब्द का अर्थ व्यक्तियों के समूह का एक समूह कहा जा सकता है। समाज के अर्थ और स्वरूप को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने नजरिए से व्यक्त करने का प्रयास किया है। डॉ.हरिसिंह की दृष्टि से समाज का अर्थ और

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

स्वरूप इसप्रकार है, "समाज मानवीय सामाजिक संबंधों की ऐसा पुंज है, जो लगातार बदलता रहता है।"[1] मानव एक दूसरे के साथ संबंध प्रस्थापित किये बिना रह ही नहीं सकता। अपने विचारों का, अपनी भाव-भावनाओं का पारस्परिक आदान-प्रदान करने का माध्यम समाज ही है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार समाज की सारी समस्याओं का, घटनाओं का चितेरा होता है। साहित्यकार और समाज का, समाज और साहित्य का पारस्परिक संबंध होता है।

समाज और साहित्य

समाज और साहित्य एक दूसरे में गूँथी हुई एक ऐसी कड़ी है जो आपसी गहरा संबंध रखती है। समाज में घटित होने वाली प्रत्येक घटना का प्रतिबिंब साहित्य में पड़ता है। साहित्यकार समाज और साहित्य के बीच संबंध स्थापित करता है। समाज में परिव्याप्त वातावरण परिस्थितियाँ आदि सभी अवस्थाएँ साहित्य में चित्रित होती हैं, क्योंकि साहित्य समाज में पलता है। लेखक सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज, संस्कृति, धर्म, राजनीति आदि से जुडा रहता है। पूर्ण सावधानी के साथ अपने समाज के चित्र को उभारने का प्रयास करता है। समाज में होने वाली घटनाओं का लेखा - जोखा उसके तत्कालीन साहित्य के द्वारा ही पता चलता है।

इस संदर्भ में राजनाथ शर्मा ने लिखा है, "कवि वास्तव में समाज की व्यवस्था, वातावरण, धर्म-कर्म, रीति-नीति तथा सामाजिक शिष्टाचार या लोकव्यवहार से ही अपने काव्य के उपकरण चुनता है और उनका प्रतिपादन अपने आदर्शों के अनुरूप ही करता है। साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है। वह अपनी समस्याओं का सुलझाव, अपने आदर्श की स्थापना, अपने समाज के आदर्शों के अनुरूप ही करता है। जिस सामाजिक वातावरण में उसका जन्म होता है, उसी में उसका शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक विकास भी होता है।"[2] इसप्रकार साहित्यकार जिस समाज में रहता है, उस समाज की हर एक घटना का चित्रण करता है।

साहित्य और समाज का घनिष्ट संबंध होता है। साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से विभिन्न घटनाओं का, समस्याओं का, चित्रण करके एक प्रकार से सामाजिक समस्याओं का चित्रण करके एक प्रकार से सामाजिक समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करता है। साहित्य का समाज पर गहरा प्रभाव होता है। अलका सरावगी ने भी अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक जीवन, सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया है।

***कोई बात नहीं* उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ**

कोई बात नहीं उपन्यास में विभिन्न सामाजिक समस्याएँ चित्रित की है। शशांक नामक अपाहिज लडके की जिंदगी सँवारने के लिए अन्य पात्रों के जरिए उसका हौसला बढाने की कोशिश की जाती है। तब विभिन्न गौण कथाओं के जरिए बहुत सी सामाजिक समस्याएँ पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास लेखिका अलका सरावगी ने की है।

1 अपाहिजों की समस्या : *कोई बात नहीं* उपन्यास का प्रमुख पात्र शशांक नामक सत्रह साल का लडका है। जिसकी जिंदगी को चित्रित किया है, जो मंदबुद्धि भी और वैसे देखा जाए तो नहीं भी। शशांक बुखार की बीमारी में अपाहिज हो जाता है और ठीक तरह से बोल भी नहीं पाता। तब से शशांक की जिंदगी सँवारने की कोशिश परिवार के सारे सदस्य, शशांक का दोस्त जतीन दा, जीवन चांडाल, शीर्षेन्दु आदि सब करते हैं। शशांक को व्हील चेअर पर स्कूल तक जाना सिखाना, उसकी बीमारी का इलाज करना, उसे चलना, बोलना सिखाना आदि कोशिश सभी को करनी पडती है।

2 पारिवारिक समस्या : अलका सरावगी के *कोई बात नहीं* उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्या सामाजिक जीवन का ही एक हिस्सा है। उपन्यास में चित्रित शशांक नामक अपाहिज लडके के इर्दगिर्द कहानी घूमती

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

है। लेकिन उसकी वजह से पूरा परिवार समस्याग्रस्त बन जाता है। किसी भी परिवार में यदि एक सदस्य किसी परेशानी से ग्रस्त हो जाता है तो उसका असर पूरे परिवार पर पड़ जाता है। रात-दिन परिवार का हर सदस्य उसी बात पर सोचता रहता है। उसी प्रकार शशांक की माँ, दादी, आरती मौसी, शशांक के पिताजी आदि सदस्य शशांक के लिए विभिन्न प्रयास करते रहते हैं। उसका डाक्टरी इलाज, धार्मिक दृष्टि से प्रयास, स्कूल भेजने संबंधी प्रयास आदि सारी कोशिशें करते हैं।

3 शोषण की समस्या : *कोई बात नहीं* उपन्यास में चित्रित दादी शोषण की शिकार है। परिवार द्वारा वह एक स्त्री, बहू होने के नाते उसका शारीरिक और मानसिक शोषण किया जाता है। भारतीय संस्कृति के परंपरागत संस्कारों के परिणामस्वरूप शशांक की दादी भी उस शोषण के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोलती। करीब-करीब अठ्ठाईस साल तक एक मूक जानवर की भाँति उसे अपना जीवन यापन करना पडता है।

जतीन दा और शशांक की बातचीत के दौरान आदिवासियों पर सरकार और पुलिस के द्वारा बार-बार होने वाले अत्याचारों का विवेचन दिखाई देता है। इस संदर्भ में डॉ.जयश्री शिंदे लिखती है, "सरकार और पुलिस के अत्याचारों की कहानियाँ बयान करते हुए साधारण आदिवासी लोग नक्सली कैसे बनते है ? और दमनकारी व्यवस्था के अत्याचारों का विरोध करते हुए प्रतिशोध लेने के लिए मानो जीवन चाण्डाल बन जाते है।"[3] आम आदमी भी अपने ऊपर होने वाले अत्याचार के कारण विद्रोह कर उठता है। सरकार और पुलिस द्वारा आदिवासियों पर होने वाले अत्याचार के कारण लोग ऐसा विचार करने लगे कि बिना खून बहाए, बिना मारे-काटे कुछ नहीं बदलेगा।

शशांक का जिंदगी संबंधी हौसला बढाने के लिए जतीन दा विभिन्न घटनाओं का जिक्र शशांक के सामने करता है। तब शीर्षेन्दु पर पुलिस यंत्रणा द्वारा बीस साल तक कैसा अन्याय, अत्याचार होता है आदि पता चल जाता है। इन्सान स्वयं को ताकतवर साबित करने के के लिए अपने पद और सत्ता का गलत इस्तेमाल करके कमजोर वर्ग के इन्सान पर जुल्म करता है। देश की पुलिस यंत्रणा गरीब, लाचार बेबसों पर अन्याय करती है। शीर्षेन्दु जैसे साधारण आदमी का जीवन बरबाद हो जाता है और अपने ऊपर हुए अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए उसे उग्रवादी ग्रुप में शामिल होना पडता है। पुलिस उस पर इतना अन्याय करती है कि, शीर्षेन्दु नहीं मिलता तो उसकी पत्नी को घर से उठाया जाता है। उसे एक महीने तक मार-मार कर टार्चर किया जाता है। शरीर पर मिले मार की चोट से शरीर के नीचे का हिस्सा लकवा मारने से बेकार हो जाता है। *कोई बात नहीं* उपन्यास में शोषण की समस्या चित्रित है।

4 महानगरीय समस्याएँ : *कोई बात नहीं* उपन्यास में मानवीय रिश्तों में आए हुए ठहराव का जिक्र हुआ है। जतीन दा शशांक को इस बारे में बताता है तब एक किस्सा सुनाता है। उसमें से महानगरीय समस्या नजर आती है। महानगरों में किसी की मौत भी हो जाए तो किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। नजदीकी नाते-रिश्तों में भी अलगाव निर्माण हो गया हैं। एक भाई अपने मृत भाई की चिता को आग लगाते ही जरूरी काम होने का बहाना बनाकर श्मशान भूमि से चला जाता है। वह दूर जाकर हाथ धोकर एक दुकान से रसगुल्ले और समोसे खाता है और उसकी जेब में सिनेमा का एक टिकट है। आधुनिक बनने की होड़ में मनुष्य असामाजिक तथा संवेदनहीन हो गया है। मूक प्राणी भी आपस में इतना घिनौना बर्ताव नहीं करते। इस संदर्भ में जतीन दा ने शशांक के साथ जो बात की है वह इसप्रकार है - "मन में रहने वाले दूसरे लोगों से सिर्फ प्रेम और सहानुभूति के रिश्ते काफी नहीं, चींटियों की तरह एक दूसरे पर विश्वास और सहयोग के रिश्ते बनाना बहुत जरूरी है।"[4] महानगरों की भीड़ में मनुष्य एक दूसरे का विश्वास और सहयोग खो चुका है। स्वार्थीपन की दौड़ में वह भाग रहा है। मानवीय संवेदना तथा आपसी प्रेम समाप्त हो गया है।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

5 अकेलेपन की समस्या: *कोई बात नहीं* की दादी माँ अकेलेपन की समस्या से ग्रस्त है। वह अपने ही परिवार में भीड़ में भी अकेली है क्योंकि, रूढि और परंपरा के बंधनों में वह जकड़ी हुई है। उस पर इतने बंधन है कि, उसे एक कमरे से दूसरे में अकेले जाने की इजाजत नहीं। तब उसे घंटों इंतजार करना पड़ता उसमें वह अकेलेपन शोषण और अन्याय की शिकार हो जाती है। सबके साथ रहते हुए भी वह खुद को अकेली महसूस करती है।

कोई बात नहीं उपन्यास का शशांक भी अपाहिज होने के कारण सबके बीच रहते हुए भी अपने आप को अकेला महसूस करता है। सभी जगह उसे अपमानित होना पडता है, इसकारण वह अकेला ही रहना पसंद करता है। एक बार पापा के बंबई के दोस्त संजय घर आते है तब इतवार होकर भी शशांक सुबह जल्दी उठकर तैयार हो जाता है। पापा उसे पूछते हैं, आज इतवार होकर भी तुम जल्दी उठे। तब शशांक को ऐसा लगता है कि पापा को उसका सभी के सामने आना अच्छा नहीं लगता। इसप्रकार से शशांक अकेलापन महसूस करता है। खुद में ही खोया हुआ सा रहने लगता है।

कोई बात नहीं उपन्यास में चित्रित शशांक की मौसी अर्थात आरती मौसी की जिंदगी भी अकेलेपन से भरी हुई है। आरती मौसी की शादी के तुरंत बाद उनके पति की मृत्यु हो जाती है। उनके बच्चे भी नहीं हुए थे तब से उनकी जिंदगी अकेलेपन से बीतने लगती है। परिवार के सारे सदस्य, रिश्तेदार दोबारा शादी करने के लिए कहते हैं, लेकिन मौसी एकदम साफ मना कर देती है। शशांक को ऐसा लगता है कि मौसी के द्वारा लिखी कहानी में मौसी का खुद का जीवन झाँकता है। शशांक वह कहानी पढकर चकराता है, वह सोचता है उस कहानी के पति-पत्नी कहीं मौसी और उनके भूतपूर्व पति तो नहीं। अलका सरावगी लिखती है - "शशांक को शक हुआ था। पर मौसी के बारे में बात करना न मौसी को पसंद है और न माँ को बस इतना मालूम है कि शादी के तुरंत बाद मौसी के पति मर गए थे।"[5] *कोई बात नहीं* उपन्यास में दादी माँ, शशांक और मौसी के अकेलेपन की समस्या का चित्रण किया गया है।

निष्कर्ष

अलका सरावगी ने अपने उपन्यास में समाज की अधिकांश समस्याओं को प्रतिबिंबित किया है। *कोई बात नहीं* उपन्यास में अपाहिज की समस्या, उस अपाहिज के कारण निर्माण हुई पारिवारिक समस्या, शिक्षा संबंधी समस्या आदि का चित्रण किया गया है। शशांक को समझाने, जिंदगी जीने की लालसा निर्माण करने तथा जीवनसंबंधी उम्मीद जताने के लिए विभिन्न सामाजिक समस्याओं का जिक्र किया गया है। शोषण की समस्या, पुलिस द्वारा किए जाने वाले अत्याचार की समस्या, महानगरीय समस्या आदि समस्याएँ भी चित्रित हैं। इन समस्याओं द्वारा अलका सरावगी ने सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुति दी है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1) डॉ.हरिसिंह - समाजदर्शन का परिचय - पृ.40, शिवहरि प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण -2001
2) शर्मा राजनाथ - साहित्यिक निबंध - पृ.35, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण - 1972
3) डॉ.शिंदे जयश्री - हिंदी उपन्यास और विमर्श : अद्यतन दृष्टि - पृ.111, ए.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण - 2012
4) सरावगी अलका - *कोई बात नहीं* - पृष्ठ - 16, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2004
5) सरावगी अलका - *कोई बात नहीं* - पृष्ठ - 174, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2004